# मेवाड़ का जल संचय, संरक्षण एवं प्रबन्धन में योगदान

## उदयपुर बेसिन में फैले ऐतिहासिक जलाशयों के भौगोलिक संयोजन की प्रथम परियोजना

**प्रस्तावना :** मेवाड़ के राणा–महाराणाओं द्वारा अपने अपने शासन काल में किये गये लोककल्याणकारी कार्यों का आज भी मेवाड़ राजघराना पूरी तरह संवर्धन कर रहा है। मेवाड़ के महाराणाओं की दूरदर्शिता के कारण आज मेवाड़ शिक्षा, चिकित्सा, जल प्रबन्धन के क्षेत्र, विरासत वाली सम्पदाओं के संरक्षण, धार्मिक एवं परोपकारी कार्यों तथा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अनवरत् रूप से कार्य कर रहा है । अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित मूल्यों का निर्वहन करते हुये फाउण्डेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी श्रीजी अरविन्द सिंहजी मेवाड़ आज भी इन कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर अपनी दैनिक जीवनचर्या में पूरा कर रहे हैं। मेवाड़ के महान मानव मूल्यों के संरक्षण के प्रति अपनी वचनबद्धता को श्रीजी ने अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझा है। निरन्तर मेवाड़ की अवधारणा को साकार करने का उनका सपना नई पीढ़ी के लिये स्थापित आदर्श मूल्यों से कम नही है।

आदिदेव भगवान श्री सूर्यनारायण की अखण्ड वंश परम्परा के कुलदीपक एवं मेवाड़ के 76वें वंशधर **श्रीजी अरविन्द सिंहजी मेवाड़, अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी, महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन, उदयपुर** के बहुआयामी व्यक्तित्व को कलमबद्ध करना प्रत्यक्षतः उतना ही असंभव है जितना कि जगत–संचालक सूर्य देव के प्रकाश को मुट्ठी में बन्द करना। श्रीजी विरासत, कला, संस्कृति एवं प्राचीन सभ्यता के संवाहक तो है ही साथ ही साथ सामाजिक, धार्मिक व परोपकारी कार्यों के पुरोधा भी है। उनका जीवन तथा व्यक्तित्व सम्पूर्ण रूप से कालान्तर से चली आ रही मेवाड़ की परम्पराओं को आमजन के बीच मूल एवं मौलिक स्वरूप में जीवित रखने को समर्पित है। विश्व के प्राचीनतम राजवंश की यशस्वी परम्पराओं के सक्षम संवाहक का उदात्त जीवन चरित्र इतने विविध आयामों को अपने भीतर समेटे हुए है कि उन्हें वरियताक्रम में ढाल कर सार्थक रूप से उनका वर्णन कर पाना वाणीपुत्रों के लिए अत्यन्त दुरूह है। आज उनके कुशल निर्देशन में निरन्तर मेवाड़ की अवधारणा प्रकाश की तरह चारों ओर फैल रही है तो उनकी आभा से सर्वहारा वर्ग लाभान्वित हो रहा है। पिछले कुछ वर्षों में श्रीजी के द्वारा कराये गये कार्यों की वजह से मेवाड़ का नाम समूचे विश्व में रोशन हुआ है चाहे वह सौलर ऊर्जा के क्षेत्र में नवीनतम प्रयोग हो या प्राचीन विरासतों वाली ईमारतों को उनके मूल एवं मौलिक स्वरूप में बनाये रखने तथा संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में किये कार्यों के कारण। फाउण्डेशन ने इस कार्य को कराने के लिये गुड़गांव में स्थापित स्वयंसेवी संस्थान द्रोणा की समन्वयक डॉ. शिखा जैन के सहयोग से पहला कन्जर्वेशन मास्टर प्लान तैयार करवाया है तथा प्लान की क्रियान्विति के लिये दी गेट्टी फाउण्डेशन, यूएसए से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त हुआ है। फाउण्डेशन ने कन्जर्वेशन मास्टर प्लान के तहत विभिन्न गतिविधियों को अपने हाथ में लिया है। इसके तहत हाल ही में सिटी पेलेस में रिस्क मैनेजमेन्ट को लेकर कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। इससे पूर्व भी प्राचीन सम्पदाओं के सरंक्षण के लिये कई कार्य फाउण्डेशन ने किये है जिन्हें देखने तथा उनका अध्ययन करने के लिये महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली आदि राज्यों से कई दल उदयपुर आये तथा यहां किये जा रहे कार्यों का अवलोकन किया। वर्तमान में फाउण्डेशन ने इन गतिविधियों के साथ झील एवं नदी संरक्षण का कार्य हाथ में लिया है । फाउण्डेशन ने खाली पड़ी झीलों की सफाई के लिये आर्थिक सहायता देने, स्वयं झीलों की सफाई के कार्य करवाने, अलग अलग इलाकों से बहने वाली नदियों को एक सूत्र में बांधने (Inter linking of Rivers) के लिये व्याख्यान आयोजित करने के कई कार्य किये हैं। फाउण्डेशन का कार्य आगे भी इसी प्रकार जारी रहेगा।

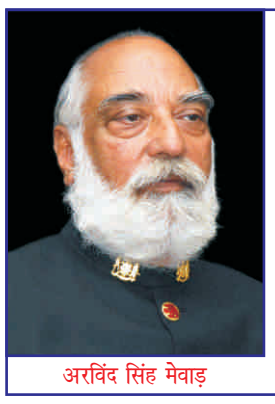

''आज जल प्रबंधन व उचित संरक्षण वक्त की सबसे बड़ी मांग है। पानी की स्थिति यही रही तो भविष्य में आयात करने की नौबत आ सकती है। नदियों को जोड़ना पानी की कमी को दूर करने का एकमात्र विकल्प नहीं है, बल्कि मौजूदा पानी का बेहतर प्रबंधन करने की आदत भी आम आदमी को डालनी होगी। देश में सबसे बड़ी जरूरत वाटर जस्टिस की है।''

अरविंद सिंह मेवाड़

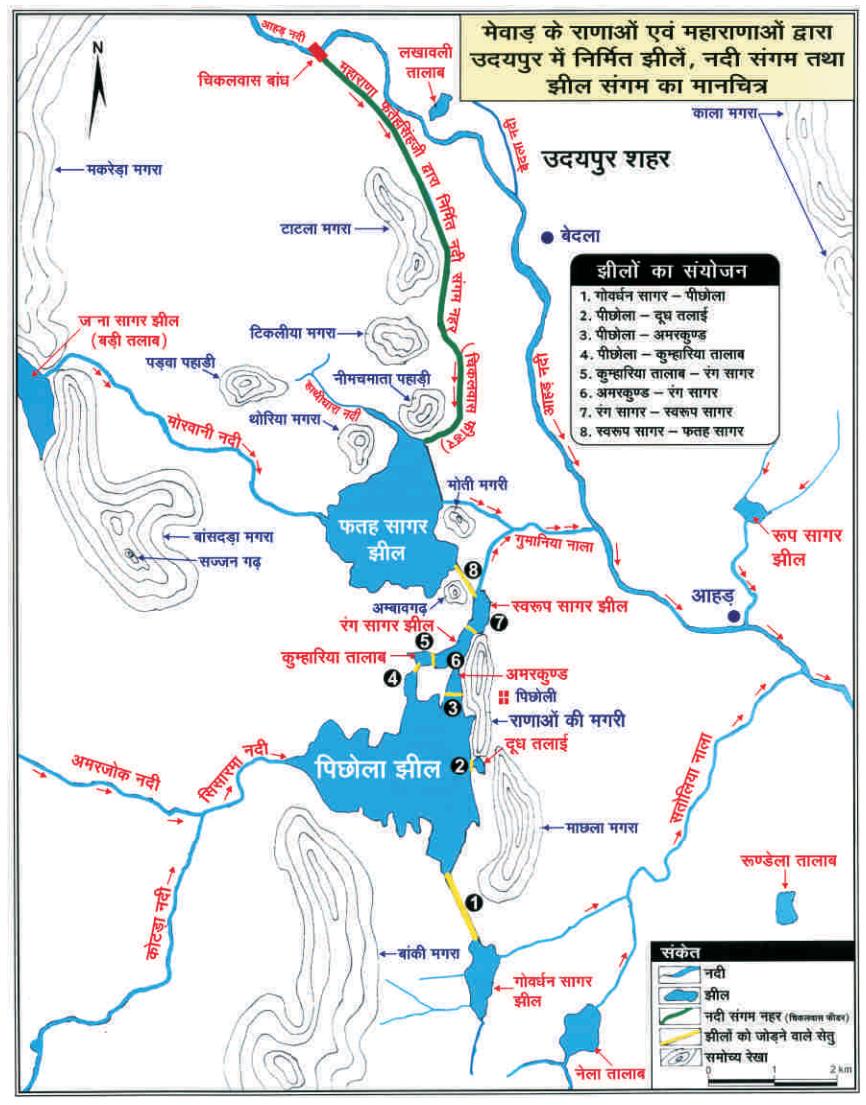


**आलेख :** आज देश जिस ज्वलंत समस्या से ग्रस्त है वह है – जल संकट। बेहतर जल प्रबन्धन के लिये समूचा विश्व अलग–अलग इलाकों से बहने वाली नदियों को एक सूत्र में (Inter Connectivity of Rivers) लाने का प्रयास कर रहा है ताकि अत्यधिक जलीय इलाकों से बह कर तबाही मचाने वाले पानी को सुखाग्रस्त इलाकों में लाकर उन्हें बचाया जा सके, तथा जल संकट की मार झेल रहे इलाकों को पानी पहुँचाकर कृषि एवं उद्योगों को बढ़ावा दिया जा सके। लेकिन इस दिशा में कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो पा रही है। देश की केन्द्र सरकार हो या राज्यों की सरकारें अब समान जल प्रबन्धन के लिये प्रयास कर रही है, लेकिन इस दिशा में मेवाड़ के तत्कालीन महाराणा फतह सिंहजी द्वारा उस दौरान बिछाया गया विश्व के पहले नदी जाल को एक आदर्श मॉडल के रूप में अपनाया जा सकता है। दुनिया में पहली बार नदियों और झीलों को जोड़ने का काम मेवाड़ में अब से 118 वर्ष पहले पूर्ण हुआ था। इसका इस्तेमाल अब देश और राजस्थान में नदियों को जोडने में किया जा सकता है । अर्थात् यह कहा जा सकता है कि महाराणा फतह सिंहजी ने नदियों को जोड़ने की अवधारणा को वर्षों पहले ही मान्यता दे दी थी। मेवाड़ के विभिन्न राणाओं एवं महाराणाओं ने अपने–अपने शासन काल के दौरान जल प्रबन्धन की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किये हैं। उदयपुर में इन जलाशयों को इस तरह बनाया गया कि झीलों के शहर के नाम से दुनिया में पहचान मिली। इसके अतिरिक्त मेवाड़ राज्य के विभिन्न शासकों का अपने शासनकाल में राष्ट्रीय एकता, स्वाधीनता, देशप्रेम, भक्ति, बलिदान, त्याग तथा राज्य के आम जन के आर्थिक विकास में अमूल्य योगदान रहा। इसी कारण ये भारत की अन्य देशी रियासतों में सर्वाधिक सम्मानजनक रहे हैं। इस सम्मान का सबसे प्रमुख कारण राज्य के विभिन्न भागों के विकास के साथ आम जन की सामान्य सुख–सुविधाओं में लगातार योगदान देना तथा उनकी सेवा के लिये सदैव तत्पर रहना था। मेवाड़ के विभिन्न राणा–महाराणाओं द्वारा लोककल्याणकारी योजनाओं के साथ जल प्रबन्धन एवं संरक्षण के कार्य विश्व भर में अपना विशेष स्थान रखते हैं। मेवाड़ के राणा–महाराणाओं ने शत्रु आक्रमण से राज्य सीमा की रक्षा के साथ–साथ अकाल एवं सूखे से निपटने हेतु युद्ध काल में वर्षा जल के संचय, संरक्षण एवं प्रबन्धन में अद्वितीय योगदान दिया जिसके श्रेष्ठ उदाहरण मेवाड़ में निर्मित विभिन्न झीलें, तालाब, बाँध एवं नहरें हैं।

**पिछले 600 वर्षों से अधिक समय से उदयपुर में मानसूनी जल संचय, संरक्षण एवं प्रबन्धन के अन्तर्गत मेवाड़ के राणाओं, महाराणाओं तथा अन्य द्वारा विकसित झीलें विश्व भर में अद्वितीय है।**

**दूध तलाई :** इसका निर्माण छीतर नामक बंजारे द्वारा किया गया। पिछोली ग्राम के ग्रामवासियों के साथ–साथ इस क्षेत्र के पशुओं के लिए जल संकट को दूर करने के उद्देश्य से इसका निर्माण किया गया। तत्कालीन गिर्वा एवं वर्तमान उदयपुर बेसिन में सबसे पहले जल प्रबन्धन के रूप में इस तलाई का निर्माण किया गया था। **पिछोला झील :** अब से लगभग 625 वर्ष पहले सन् 1383–85 में राणा लाखा द्वारा माछला मगरा तथा राणाओं की मगरी ( आज का सिटी पेलेस परिसर ) के बीच बांध बनाकर पिछोला झील का निर्माण किया गया। महाराणा जवान सिंहजी तथा महाराणा स्वरूप सिंहजी ने अपने–अपने शासनकाल में पिछोला झील की बड़ी पाल को पक्का किया, जो अपनी पवित्रता, सुदृढ़ता तथा सुन्दरता के लिए विश्व प्रसिद्ध है। **गौवर्धन सागर झील :** पिछोला झील से लगभग 3 किलोमीटर दूर दक्षिण में स्थित वर्तमान गौवर्धन सागर के निकट 275 वर्ष पहले सन् 1734 से 1751 के बीच राणा जगत सिंहजी 'द्वितीय' के शासनकाल में धायभाई माना द्वारा एक छोटे कुण्ड का निर्माण कराया गया। महाराणा स्वरूप सिंहजी ने सन् 1857 में इस कुण्ड के समीप एक तालाब एवं गौशाला का निर्माण करवाया, जिसके कारण इस तालाब को गौवर्धन झील के नाम से जाना जाने लगा। महाराणा स्वरूप सिंहजी के ही शासनकाल में चट्टानों को हटा कर एक नहर द्वारा गौवर्धन सागर को पिछोला से जोड़ा गया। **अमर कुण्ड :** वर्तमान समय में अमर कुण्ड पिछोला झील का हिस्सा है। मेवाड़ राज्य के तत्कालीन प्रधान अमरचन्द बड़वा ने इस कुंड का निर्माण करवाया था। सन् 1874 में महाराणा सज्जन सिंहजी ने इस कुण्ड को पिछोला में शामिल कर दिया। **रंग सागर झील :** इस झील का निर्माण सन् 1668 में राणा राज सिंहजी 'प्रथम' द्वारा अपने पुत्र राजकुमार सुल्तान सिंहजी ''सुरत्राण'' की स्मृति में करवाया गया। **कुम्हारिया तालाब :** इसका निर्माण उदयपुर नगर की स्थापना के साथ ही कुम्हारों के लिए राणा उदय सिंहजी द्वारा करवाया गया। महाराणा सज्जन सिंहजी के शासन काल में सन् 1874 में इस तालाब को रंगसागर झील में मिला दिया, जो आज भी मौजूद है। **स्वरूप सागर झील :** इस झील का निर्माण महाराणा स्वरूप सिंहजी के द्वारा किया गया। इससे पूर्व इस जगह पर कलालों का शिव मन्दिर तथा एक छोटा कुण्ड था, जो कलाल्या शिवसागर कुण्ड के नाम से जाना जाता था। सन् 1845 में महाराणा स्वरूप सिंहजी ने इस कुण्ड को बड़े तालाब में बदलकर झील का रूप दे दिया जिसे स्वरूप सागर नाम से जाना जाने लगा। **फतह सागर झील :** इस झील का सर्वप्रथम निर्माण राणा जय सिंहजी ने सन् 1680 में करवाया इससे पूर्व यह देवाली तालाब के नाम से जाना जाता था। महाराणा भीम सिंहजी के शासनकाल में सन् 1795 की अतिवृष्टि से यह तालाब पूर्ण रूप से नष्ट हो गया। महाराणा फतह सिंहजी के शासनकाल में सन् 1889 में इस बांध का पुनः निर्माण करवा कर झील का स्वरूप दिया गया। सन् 1889 में बाँध की नींव इंग्लैण्ड के ड्यूक ऑफ कॅनाट द्वारा रखी गई। ड्यूक ऑफ कॅनाट ने पुनः निर्मित बांध का नाम फतह सागर झील रखा। फतह सागर में जनासागर (बड़ी का तालाब) बनने से पहले मोरवानी नदी का पानी बहकर आता था, परन्तु जनासागर बनने से इसमें केवल हाथीधारा नदी एवं चिकलवास नहर द्वारा पानी की आवक उस समय भी होती थी, जैसे आज हो रही है। जनासागर जब कभी पूरा भरने के बाद छलकता है, तो उसका पानी फतहसागर झील में आता है। इसके अतिरिक्त पिछोला भर जाने पर पानी रंगसागर, स्वरूपसागर की नहरों द्वारा फतह सागर में पहुँचा दिया जाता है, जिसकी आवक आज भी निर्बाध रूप से जारी है। **जनासागर झील (बड़ी का तालाब) :** इस जलाशय का निर्माण उदयपुर नगर से 10 किलोमीटर दूर पश्चिम में स्थित बड़ी ग्राम के पास राणा राज सिंहजी 'प्रथम' ने अपनी माताश्री राजमाता जनादे की स्मृति में सन् 1668 में करवाया। इस जलाशय के निर्माण का मुख्य उद्देश्य बड़ी तथा उसके पास के गांवों में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराने के साथ–साथ वर्तमान फतहसागर एवं तत्कालीन देवाली तालाब में पानी की आवक को नियन्त्रित कर इसमें वर्ष भर पानी उपलब्ध कराना था। यह बांध इतना सुदृढ़ बनाया गया था, कि सन् 1795 में अतिवृष्टि के समय इसे किसी भी प्रकार की हानि नहीं हुई। **उदयसागर झील :** सन् 1553 में मेवाड़ की नई राजधानी के रूप में उदयपुर की स्थापना के साथ आहड़ नदी पर बांध का निर्माण कराया गया तथा सन् 1564 में इसका निर्माण कर वर्षा जल भरा जाने लगा। इस बांध के बनाने का मुख्य उद्देश्य गिर्वा क्षेत्र में नई राजधानी को सैनिक दृष्टि से सुरक्षा प्रदान करने के साथ–साथ पेयजल एवं सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराना रहा। उदयसागर झील का निर्माण माइक्रो वाटरशेड नियोजन का सबसे श्रेष्ठ उदाहरण है।

### नदी संगम अवधारणा के जनक महाराणा फतह सिंह

विश्व में पहली बार नदियों को आपस में जोड़ने का श्रीगणेश उदयपुर बेसिन में महाराणा फतह सिंहजी द्वारा 13 अगस्त सन् 1890 में किया गया। **महाराणा फतह सिंहजी की दूरदर्शिता का यह कदम विश्व में जल प्रबन्धन के विकास के विभिन्न सोपानों में अद्भुत एवं अनोखी घटना है।** उदयपुर शहर के पश्चिमोत्तर में 6 किलोमीटर दूरी पर स्थित चिकलवास गाँव के समीप आहड़ नदी पर एक बांध बनाकर वर्षा ऋतु में प्रवाहित अतिरिक्त जल को फतह सागर में पहुँचाने के लिए चिकलवास नहर का निर्माण किया। इस नहर निर्माण से फतह सागर में आहड़ नदी का पानी 118 वर्ष पहले पहुँचा दिया, जबकि उस वक्त विश्व के अन्य भागों (संयुक्त राज्य अमेरिका की टैनेसी नदी घाटी योजना सहित) में इस प्रकार का कार्य कहीं पर भी नहीं हुआ था। मेवाड़ ही विश्व में एकमात्र ऐसा राज्य रहा है जहाँ नदियों को आपस में जोड़कर नदी संगम परिकल्पना विश्व के समक्ष प्रस्तुत की गई।

**राणा लाखा से लेकर राणा उदय सिंहजी, राणा जगत सिंहजी, राणा राज सिंहजी, राणा जय सिंहजी, महाराणा भीम सिंहजी, महाराणा जवान सिंहजी, महाराणा स्वरूप सिंहजी, महाराणा सज्जन सिंहजी एवं महाराणा फतह सिंहजी द्वारा समय–समय पर अपने शासनकाल में उदयपुर बेसिन एवं मेवाड़ के अन्य भागों में निर्मित विभिन्न जलाशय जल प्रबन्धन एवं संरक्षण विश्व भर में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।** उदयपुर बेसिन में योजनाबद्ध तरीके से विकसित जलाशय जल संरक्षण एवं प्रबन्धन में विशेष रूप से अत्यन्त आश्चर्यचकित किये जाने वाले हैं। मात्र 470 वर्ग किलोमीटर में फैली छोटी घाटी गिर्वा में क्रमबद्ध जलाशयों का निर्माण तथा नदियों को आपस में जोड़कर यहाँ के तत्कालीन शासकों ने स्थानीय स्तर पर उपलब्ध वर्षा जल प्रबन्धन एवं संरक्षण की तकनीक को महत्व देकर आज विश्व के सामने जल संचय के महत्व को विगत छः सौ से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व ही मान्यता प्रदान कर दी। उदयपुर शहर में गौवर्धन सागर, दूध तलाई, पिछोला झील, अमर कुण्ड, कुम्हारिया तालाब, रंग सागर, स्वरूप सागर तथा फतह सागर जलाशयों का निर्माण जल प्रबन्धन की दृष्टि से विश्व भर में श्रेष्ठ उदाहरण हैं। यद्यपि इन सभी जलाशयों की गहराई अलग होने के साथ–साथ समुद्रतल से ऊँचाई भी अलग–अलग है। वर्षा ऋतु में जब ये जलाशय पानी से भर जाते हैं तो इन सभी जलाशयों का जल स्तर एक समान हो जाता है एवं पानी आपस में मिल जाता है। इस प्रकार के जलाशय विश्व भर में एकमात्र उदयपुर में ही विकसित किये गये।

मेवाड़ के महाराणा फतह सिंहजी ने विश्व में पहली बार 13 अगस्त, सन् 1890 को चिकलवास नहर में पानी छोड़कर आहड़, मोरवानी तथा सीसारमा (कोटड़ा) नदियों को आपस में जोड़ने का करिश्मा कर दिखाया। आज भारत सहित विश्व के अनेक भागों में आने वाले जल संकट को देखते हुए नदियों को जोड़ने के बारे में गम्भीरतापूर्वक विचार किया जा रहा है तथा चीन में नदियों को आपस में जोड़ने का कार्य शुरू भी कर दिया गया है। ऐसे में अब से 118 वर्ष पूर्व स्थानीय स्तर पर सीसारमा (कोटड़ा) मोरवानी एवं आहड़ को आपस में जोड़कर महाराणा फतह सिंहजी ने विकास में नदी संगम की नई अवधारणा को विश्व में सर्वप्रथम मूर्त रूप दिया। महाराणा फतह सिंहजी को नदी संगम अवधारणा का जनक कहा जाता है।

महाराणा फतह सिंहजी द्वारा प्रस्तुत नदी संगम परिकल्पना में उदयपुर बेसिन में प्रवाहित तीन प्रमुख नदियां सीसारमा, मोरवानी तथा आहड़ नदियों को माछला मगरा से लेकर राणाओं की मगरी, मोती मगरी एवं नीमच माता मगरी के बीच गौवर्धन सागर, पिछोला, दूध तलाई, अमरकुण्ड, कुम्हारिया तालाब, रंगसागर, स्वरूप सागर एवं फतह सागर जलाशयों का निर्माण कर नदियों में बहने वाले वर्षा जल को रोककर जल संसाधन विकास एवं संरक्षण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। सन् 1668 में जनासागर झील (बड़ी का तालाब) बन जाने के उपरान्त पूर्व देवाली के तालाब में पानी की आवक कम होने तथा सन् 1795 में बाढ़ से ग्रसित तालाब खाली रहने लगा। इस स्थिति से निपटने के लिए तत्कालीन महाराणा फतह सिंहजी ने सन् 1889 में इस तालाब का पुनःनिर्माण करा बड़े बांध में परिवर्तित कर दिया। सन् 1888 में आहड़ नदी पर चिकलवास ग्राम के समीप एक बांध बना कर 6 किलोमीटर लम्बी चिकलवास नहर बनाकर फतहसागर में वर्षा का पानी पहुंचाया, जिससे फतहसागर में वर्ष भर पानी रहने लगा। विश्व इतिहास एवं भूगोल में पहली बार स्थानीय स्तर पर एक सब बेसिन से दूसरे सब बेसिन अर्थात् एक सूक्ष्म जल द्रोणिका से दूसरे सूक्ष्म जल द्रोणिका में पानी पहुँचाने का अनोखा उदाहरण उदयपुर बेसिन में तत्कालीन मेवाड़ महाराणा फतह सिंहजी द्वारा प्रस्तुत किया गया। उदयपुर बेसिन में मेवाड़ की राजधानी की स्थापना के साथ ही सन् 1564 में उदयसागर का निर्माण कर राणा उदय सिंहजी ने राणा लाखा द्वारा निर्मित पिछोला झील के वर्षा ऋतु में नदी में बहने वाले जल को रोककर जल संरक्षण के कार्य को आगे बढ़ाया। उदयपुर बेसिन में विभिन्न राणा–महाराणाओं द्वारा निर्मित विभिन्न छोटे–बड़े जलाशय सिंचाई, पेयजल, एवं रमणीयता हेतु जल प्रबन्धन के विश्व में श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

### राणा राज सिंह 'प्रथम' की नदी मोड़ एवं संयोजन परिकल्पना

विश्व में पहली बार राणा राज सिंहजी 'प्रथम' ने नदी बहाव को कृत्रिम रूप से मोड़ कर उसे स्थायित्व प्रदान किया। मेवाड़ के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल उबेश्वर क्षेत्र से निकलने वाली उबेश्वर नदी को मोड़कर मोरवानी नदी में मिला दिया। इस प्रकार यह जल जनासागर तथा फतह सागर में पहुँचा। इससे पूर्व उबेश्वर नदी का जल छोटा मदार में मिलता था। उबेश्वर के जल को मोरवानी नदी के साथ मिलाने का कार्य सन् 1653–80 के बीच किया गया। इस प्रकार राणा राज सिंहजी 'प्रथम' ने विश्व में पहली बार नदी को मोड़कर एक अनोखी योजना का प्रादुर्भाव किया जो आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। वर्तमान में कई देशों की सरकारें वर्षा जल को नदियों के द्वारा मोड़कर सूखे क्षेत्रों में पहुँचाने के लिए कार्य कर रही हैं। राणा राज सिंहजी 'प्रथम' का यह कार्य वर्षा जल प्रबन्धन का श्रेष्ठ उदाहरण है। वर्तमान समय में उदयपुर शहर के पश्चिम में 18 किलोमीटर दूर स्थित धार गाँव से 2 किलोमीटर आगे पश्चिम की ओर उबेश्वर नदी को मोरवानी नदी में मिलाने हेतु 350 वर्ष पूर्व बनाया गया पक्का बांध आज भी पूर्णतः सुरक्षित है। राणा राज सिंहजी 'प्रथम' द्वारा नदियों के बहाव को मोड़ने एवं महाराणा फतह सिंहजी द्वारा नदियों को नहरों द्वारा जोड़ने की स्थापित अवधारणा को आधार मान कर वर्तमान समय में भारतीय नदियों को आपस में जोड़ कर आने वाले जल संकट का सामना किया जा सकता है।

अनुसंधान एवं संकलन – डॉ. नरपत सिंह राठौड़, एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, कला महाविद्यालय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
वास्ते महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन, उदयपुर

नरपत सिंह राठौड़

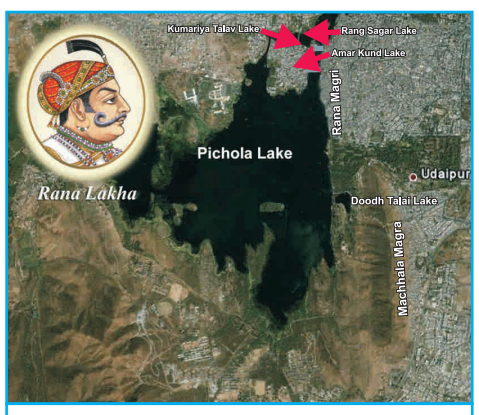


Constructed by
Rana Lakha in 1382 AD

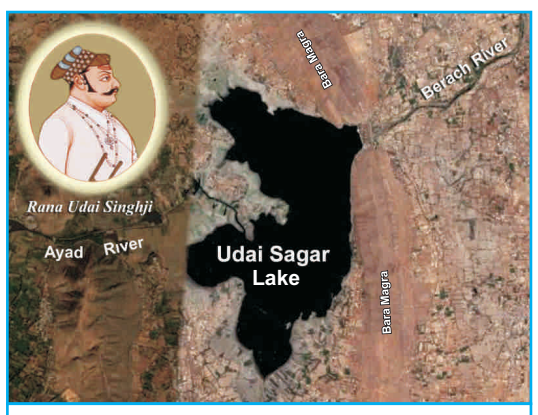


Constructed by
Rana Udai Singh II in 1564 AD

Constructed by
Rana Raj Singh I in 1668 AD

Constructed by Rana Jai Singh in 1680-1698 AD
and renovated in 1889 AD by Maharana Fateh Singh

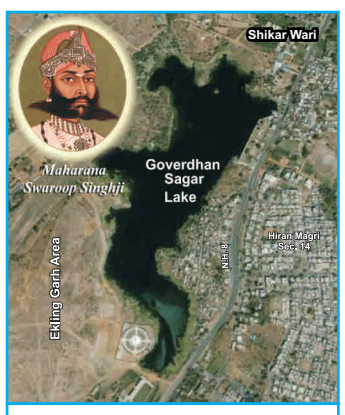


Constructed by
Maharana Swaroop Singh in 1857 AD

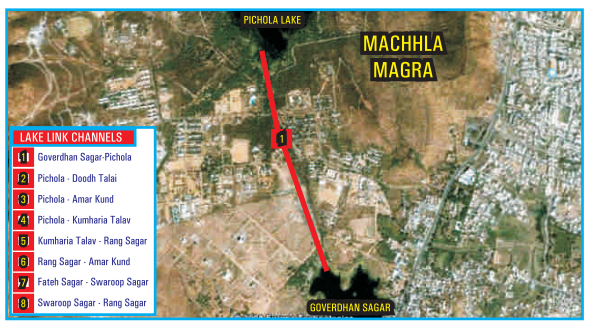


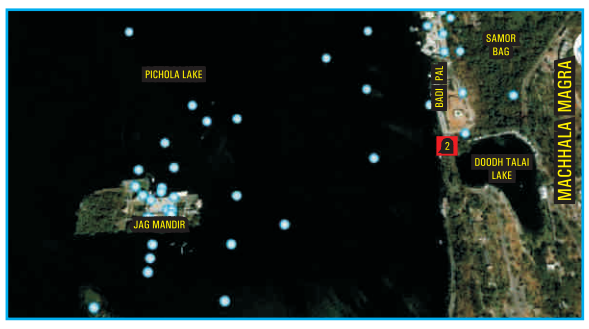


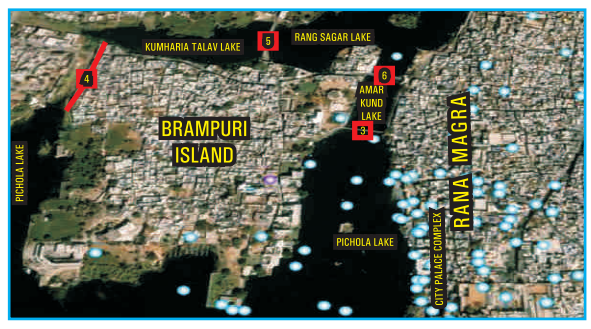

**Contribution of Mewar in Interlinking Rivers and Lakes: shown through Google Satellite images**

सतत् प्रयास एवं सौजन्य :
**महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन**
सिटी पेलेस, उदयपुर 313001, राजस्थान, भारत
टेलीफोन : 91 294 2419021-9 फैक्स : 2419020 mmcf@eternalmewar.in www.eternalmewar.in

Eternal Mewar
*Custodianship unbroken since 734 AD*

MAHARANA MEWAR FOUNDATION
सूर्यवंशी न्यास का ये रथिम रथ चलता रहेगा।
पीढियों के रक्त में इसका सुयश पलता रहेगा।।
रीति रघुकुल की जिसे शिव से विरासत में मिली हो।
आंधियों में वह दिया जलता रहा जलता रहेगा।।